Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Bhav Tribhangi

Folder No.	002685
Granth Name	Bhav Tribhangi
Author	Shrutmuni
Editor & Translator	Vinod Jain, Anil Jain
Publisher	Gangwal Dharmik Trust Raipur
Edition	1
Year	2000
Pages	158

भाव त्रिभङ्गी

फोल्डर नं.	००२६८५
ग्रन्थ	भाव त्रिभङ्गी
लेखक	श्री श्रुतमुनि
संपादक तथा अनुवादक	विनोद जैन, अनिल जैन
प्रकाशक	गंगवाल धार्मिक ट्रस्ट, रायपुर
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२०००
पृष्ठ	१५८

मुख्य टाईटल
प्रकाशकीय
पुरोवाक
हृदयोदगार
सम्पादकीय
ग्रन्थकर्ता का परिचय आचार्य श्रुतमुनि
विषयानुक्रमणिका
मंगलाचरण एवं प्रतिज्ञा वचन ---------- १
मतिज्ञानादि भावों की उत्पत्ति व्यवस्था ---------- २-१०
भावों के मूल व उत्तर भेद ---------- १०-१२
चौदह गुणस्थानों में मूलभाव ---------- १३-१५
मिथ्यात्व गुणस्थान में चौंतीस भाव ---------- १५

चौदह गुणस्थानों में भाव व्युच्छित्ति -- १६-२०
गुणस्थानों में सदभाव रुप भाव --- २०-२१
गुणस्थानों में अभाव भावों का कथन--- २१
चौदह गुणस्थानों में भाव त्रिभड्गी एवं संदृष्टि १ -- २२-२९
मध्य मंड्गलाचरण व प्रतिज्ञा वचन --- २९
तीन सम्यकत्वों का सदभाव -- ३०-३२
नरकगति में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ २-११ ---३२-३५
तिर्यंचगति में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ १२-१८ ------------------------------------- ४५-५७
मनुष्यगति में भाव त्रिभड्गी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ १९-२७ ------------------------------------ ५८-७४
देवगति में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ २८-४२ -- ७४-८६
ईन्द्रिय एवं काया मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ४३-४७------------------- ८७-८८
योग मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ४८-५५ ------------------------------- ८८-१०२
वेद मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ५६-५८ ------------------------------------- १०४
कषाय मार्गणा एवं अज्ञानत्रय में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ५९-६१ -------------- १०७-१०८
ज्ञान मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ६२-६४ ------------------------------ १११-११५
संयम मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ६५-७० ---------------------------- ११६-१२०
दर्शन मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ७१-७३ -------------------------------- १२२
लेश्या मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ७४-७६ --------------------------- १२५-१२७
भव्य एवं सम्यकत्व मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ७७-८४ -------------- १२९-१३२
संज्ञी मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ८५-८६ ---------------------------------- १३३
आहारक मार्गणा में भाव त्रिभग्डी व्यवस्था एवं संदृष्टि याँ ८७-८८ ------------------------------ १४०
अंतिम मग्डलाचरण एवं लघुता प्रदर्शन ११५-११६ -- १४३-१४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org